

१५. कुसङ्गोद्भवदोषस्य कथा ।

श्रीसर्वज्ञं नमस्कृत्य सर्वसत्त्वहितप्रदम् । वक्ष्ये दुस्सङ्गदोषस्य कथां दुस्सङ्गहानये ॥१॥
 वत्सदेशेत्र विख्याते कौशाम्बीपत्तने शुभे । राजाभूद्धनपालाख्यो दुष्टानां मानमर्दकः ॥२॥
 चतुर्वेदपुराणादि-सर्वशास्त्रविचक्षणः । पुरोहितो भवत्तस्य शिवभूतिर्द्विजोत्तमः ॥३॥
 तत्रैव कल्पपालश्च पूर्णचन्द्रो धनैर्युतः । मणिभद्रा प्रिया तस्य सुमित्राख्या सुता भवत् ॥४॥
 कदाचित्पूर्णचन्द्रोसौ सुमित्राया विवाहके । भोजयित्वाखिलं लोकं युक्तितो वरभोजनः ॥५॥
 आमंत्रितश्च मित्रत्वाच्छिवभूतिः पुरोहितः । तेनोक्तं मित्रं शूद्रान्न-मस्माकं नैव कल्पते ॥६॥
 कल्पपालः पुनः प्राह पवित्रोद्यानके सुधीः । निष्पादितं महाविप्रैर्भोजनं क्रियतामिति ॥७॥
 एवमस्त्विति तेनोक्तं ब्राह्मणेन तदाग्रहात् । तद्वानं हि प्रधानं स्याल्लोके यद्विनयान्वितम् ॥८॥

आत्म तत्त्व का श्रद्धान करना यही शुद्ध सम्यक्त्व है उसे जानना वही सम्यग्ज्ञान है और उसी में अपने मन को निश्चल कर ठहराना वही सम्यक्चारित्र हैं । यही स्तनत्रय है जो कि मोक्ष का मार्ग है अर्थात् तत्त्व को देखना, जानना व उसमें लीन होना यही मोक्ष का निश्चल मार्ग है ।

१५. शिवभूति पुरोहित की कथा

(कुसंगति के फल की कथा)

मैं संसार के हित करने वाले जिनभगवान् को नमस्कार कर दुर्जनों की संगति से जो दोष उत्पन्न होते हैं, उससे सम्बन्ध रखने वाली एक कथा लिखता हूँ, जिससे कि लोग दुर्जनों की संगति छोड़ने का यत्न करें ॥१॥

यह कथा उस समय की है, जब कि कौशाम्बी का राजा धनपाल था । धनपाल अच्छा बुद्धिमान् और प्रजाहितैषी था । शत्रु तो उसका नाम सुनकर काँपते थे । राजा के यहाँ एक पुरोहित था । उसका नाम था शिवभूति । वह पौराणिक अच्छा था ॥२-३॥

वहीं दो शूद्र रहते थे । उनके नाम कल्पपाल और पूर्णचन्द्र थे । उनके पास कुछ धन भी था । उनमें पूर्णचन्द्र की स्त्री का नाम था मणिप्रभा । उसके एक सुमित्रा नाम की लड़की थी । पूर्णचन्द्र ने उसके विवाह में अपने जातीय भाइयों को जिमाया और उसका राज पुरोहित से कुछ परिचय होने से उसने उसे भी निमंत्रित किया । पर पुरोहित महाराज ने उसमें यह बाधा दी कि भाई, तुम्हारा भोजन तो मैं नहीं कर सकता । तब कल्पपाल ने बीच में ही कहा-अस्तु । आप हमारे यहाँ का भोजन न करें । हम ब्राह्मणों के द्वारा आपके लिए भोजन तैयार करवा देंगे तब तो आपको कुछ उजर न होगा । पुरोहितजी आखिर थे तो ब्राह्मण ही न? जिनके विषय में यह नीति प्रसिद्ध है कि “असन्तुष्टा द्विजा नष्टाः” अर्थात् लोभ

ततोसौ पूर्णचन्द्रश्च विप्रहस्तेन भोजनम्। उद्याने कारयामास रसैः षड्भिः समन्वितम् ॥९॥
 तत्रैकतो वने पूर्ण-चन्द्रं तं बन्धुभिर्युतम्। अन्यपाश्वर्षे द्विजं तं च पिबन्तं दुग्धशर्कराम् ॥१०॥
 कैश्चिल्लोकैः समालोक्य धनपालमहीपतेः। प्रोक्तं देव कृतं मद्य-पानं ते शिवभूतिना ॥११॥
 इत्याकर्ण्य महीनाथस्तमाहूय द्विजोत्तमम्। पृष्ट्वांश्च द्विजः प्राह कृतं नैव मया प्रभो ॥१२॥
 परीक्षार्थं ततो राज्ञा शिवभूतिं पुरोहितं। कारितो वमनं विप्रभू वेदवेदाङ्गपारगः ॥१३॥
 स्वभावतोतिदुर्गन्धे कृते तस्मिंश्च वान्तिके। महाकोपेन सन्तप्तो धनपालो धराधिपः ॥१४॥
 निर्भर्त्स्य निष्ठुरैर्वाक्यैः शिवभूति सुकष्टतः। देशान्निर्घाटयामास कुसङ्गः कष्टदो ध्रुवम् ॥१५॥
 अतो भव्यैः परित्यज्य कुसङ्गं सर्वनिन्दितम्। सङ्गतिः सुजनानां च कर्त्तव्या परमादरात् ॥१६॥

श्रीमज्जैनपदाब्जयुग्मरसिकैर्भव्यालिभिः साधुभिः
 कर्त्तव्या सह सङ्गतिः सुनितरां त्यक्त्वा कुसंगं बुधैः।
 सम्मानं धनधान्यमुन्नतिपदं प्रीतिं सतां सर्वदा
 या लोके च करोति सङ्गतिरसौ सा मे क्रियान्मङ्गलम् ॥१७॥
 इति कथाकोशे कुसङ्गेद्भवदोषस्य कथा समाप्ता।

में फँसकर ब्राह्मण नष्ट हुए। सो वे एक बार के भोजन का लोभ नहीं रोक सके। उन्होंने यह विचार कर, कि जब ब्राह्मण भोजन बनाने वाले हैं, तब तो कुछ नुकसान नहीं, उसका भोजन करना स्वीकार कर लिया। पर इस बात पर उन्होंने तनिक भी विचार नहीं किया कि ब्राह्मणों ने भोजन बना दिया तो हुआ क्या? आखिर पैसा तो उसका है और न जाने उसने कैसे-कैसे पापों द्वारा उसे कमाया है।

जो हो, नियमित समय पर भोजन तैयार हुआ। एक ओर पुरोहित देवता भोजन के लिए बैठे और दूसरी ओर पूर्णचन्द्र का परिवार वर्ग। इस जगह इतना और ध्यान में रखना चाहिए कि दोनों का चौका अलग-अलग था। भोजन होने लगा। पुरोहित जी ने मन भर माल उड़ाया। मानों उन्हें कभी ऐसे भोजन का मौका ही नसीब नहीं हुआ था। पुरोहित जी को वहाँ भोजन करते हुए कुछ लोगों ने देख लिया। उन्होंने पुरोहित की शिकायत महाराज से कर दी। महाराज ने उसकी परीक्षा करने हेतु उसे वमन करवाया तब उसके अतिदुर्गन्धित वमन से राजा कुपित हुआ। महाराज ने एक शूद्र के साथ भोजन करने वाले, वर्ण व्यवस्था को धूल में मिलाने वाले ब्राह्मण को अपने राज्य में रखना उचित न समझ देश से निकलवा दिया। सच है-“कुसंगो कष्टदो ध्रुवम्” अर्थात् बुरी संगति दुःख देने वाली ही होती है। इसलिए अच्छे पुरुषों को उचित है कि वे बुरों की संगति न कर सज्जनों की संगति करें, जिससे वे अपने धर्म, कुल, मान-मर्यादा की रक्षा कर सकें ॥४-१७॥

१६. पवित्रहृदयबालकस्य कथा ।

बालो विलोक्यते यादृक्तादृशं वदति ध्रुवम् । नत्वा जिनं प्रवक्ष्यामि तत्कथां बुद्धये नृणाम् ॥१॥
 कौशाम्बीनगरे राजा जयपालो विचक्षणः । श्रेष्ठी सागरदत्ताख्यो धनाढ्यो धर्मवत्सलः ॥२॥
 भार्या सागरदत्ताभूतयोः पुत्रो बभूव च । नाम्ना समुद्रदत्तोसौ रूपलावण्यमण्डितः ॥३॥
 तत्रैव नगरे जातो गोपायनवणिक्कुधीः । सप्तव्यसनसंसक्तः पापतो धनवर्जितः ॥४॥
 तस्य सोमाभवद्भार्या तयोः पुत्रश्च सोमकः । संजातो वत्सरैः कैश्चित्क्रमेण प्रौढबालकः ॥५॥
 तौ द्वौ स्वलीलया बालौ बालक्रीडां परस्परम् । नित्यं समुद्रदत्ताख्य-सोमकौ कुरुतः स्म च ॥६॥
 एकदा धनलोभेन पापी गोपायनो वणिक् । बालं समुद्रदत्ताख्यं सर्वाभरणभूषितम् ॥७॥
 पश्यतः सोमकस्याग्रे मारयित्वा स्वगेहके । गृहीत्वाभरणान्याशु गर्तायां क्षिप्तवान्कुधीः ॥८॥
 तदा सागरदत्ताद्यैस्तत्कुटुम्बैः सुदुःखितैः । कष्टतोपि न दृष्टोसौ पुण्यहीने यथा सुखम् ॥९॥

१६. पवित्र हृदय वाले एक बालक की कथा

बालक जैसा देखता है, वैसा ही कह भी देता है क्योंकि उसका हृदय पवित्र रहता है। यहाँ मैं जिनभगवान् को नमस्कार कर एक ऐसी ही कथा लिखता हूँ, जिसे पढ़कर सर्व साधारण का ध्यान पापकर्मों के छोड़ने की ओर जाये ॥१॥

कौशाम्बी में जयपाल नाम के राजा हो गए हैं। उनके समय में वहीं एक सेठ हुआ है। उसका नाम समुद्रदत्त था और उसकी स्त्री का नाम समुद्रदत्ता। उसके एक पुत्र हुआ। उसका नाम सागरदत्त था। वह बहुत ही सुन्दर था। उसे देखकर सबका चित्त उसे खिलाने के लिए व्यग्र हो उठता था। समुद्रदत्त का एक गोपायन नाम का पड़ोसी था। पूर्वजन्म के पापकर्म के उदय से वह दरिद्री हुआ। इसलिए धन की लालसा ने उसे व्यसनी बना दिया। उसकी स्त्री का नाम सोमा था। उसके भी एक सोमक नाम का पुत्र था। वह धीरे-धीरे कुछ बड़ा हुआ और अपनी मीठी और तोतली बोली से माता पिता को आनन्दित करने लगा ॥२-५॥

एक दिन गोपायन के घर पर सागरदत्त और सोमक अपना बालसुलभ खेल खेल रहे थे। सागरदत्त इस समय गहना पहने हुए था। उसी समय पापी गोपायन आ गया। सागरदत्त को देखकर उसके हृदय में पाप वासना हुई दरवाजा बन्द कर वह कुछ लोभ के बहाने सागरदत्त को घर के भीतर लिवा ले गया। उसी के साथ सोमक भी दौड़ा गया। भीतर ले जाकर पापी गोपायन ने उस अबोध बालक का बड़ी निर्दयता से छुरी द्वारा गला काट दिया और उसका सब गहना उतारकर उसे गड्ढे में गाड़ दिया ॥६-८॥

कई दिनों तक बराबर कोशिश करते रहने पर भी जब सागरदत्त के माता-पिता को अपने बच्चे का कुछ हाल नहीं मिला, तब उन्होंने जान लिया कि किसी पापी ने उसे धन के लोभ से मार